बुद्धवर्ष 2551, चैत्र पूर्णिमा, 20 अप्रेल, 2008 वर्ष 37 अंक 10

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: www.vri.dhamma.org/newsletters

धम्मवाणी

उट्ठानेनप्पमादेन, संयमेन दमेन च।
दीपं कयिराथ मेधावी, यं ओघो नाभिकीरति॥
-- धम्मपद २५, अप्पमादवग्गो

मेधावी (पुरुष) उद्योग, अप्रमाद, संयम तथा (इंद्रियों के) दमन द्वारा (अपने लिए ऐसा) द्वीप बना ले जिसे (चार प्रकार के क्लेशों की) बाढ़ आप्लावित न कर सके।

'बुद्धचारिका'

मार-कन्याओं का दुष्प्रयत्न निष्फल

सम्यक संबोधि उपलब्ध होने के पश्चात सम्यक संबुद्ध ने बोधिमंड में पांचवां सप्ताह अजपाल वटवृक्ष के तले ध्यान में बिताया। यहां रहते हुए दुष्ट मार पुनः उनसे यह विवाद करने आया कि तुमने स्वयं भवमुक्त अवस्था प्राप्त कर ली है। अब यह मुक्तिदायिनी विपश्यना विद्या औरों को सिखाने का संकल्प क्यों कर रहे हो? जब मार सम्यक संबुद्ध को अपने इस कुशल चिंतन से नहीं डिगा सका तब इस दूसरी पराजय से अत्यंत संतापित होकर गहरी निराशा में डूब गया। वह दुःखी मन से एकांत में एक ओर अकेला जा बैठा।

उसकी तीन पुत्रियों – तृष्णा, अरती (द्वेष) और रगा (राग) ने अपने पिता की यह दशा देखी तो उसे आश्वासन देते हुए कहा कि जिस बुद्ध को आप नहीं डिगा सके, उसे हम डिगायेंगी। यह दावा करके वे तीनों भगवान सम्यक संबुद्ध के समीप जा पहुँचीं। वहां विभिन्न प्रकार से अपने अंग-प्रत्यंगों के प्रदर्शन द्वारा उन्हें आकर्षित करने का प्रयत्न करने लगीं। सम्यक संबुद्ध ध्यान की फल-समापत्ति में अचल बैठे रहे। उन्होंने आंखें भी नहीं खोलीं। इन युवतियों ने भिन्न-भिन्न लुभावने रूप और आकृतियां धारण कर उन्हें रिझाना चाहा। मारपुत्रियों ने तपस्वी से प्रार्थना भी की कि उन्हें सेवा का अवसर दिया जाय। लेकिन सम्यक संबुद्ध ध्यानमग्न ही बने रहे। उन पर इन कुचेष्टाओं का रंचमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। अंततः वे भी हार मान कर अपने पिता के पास लौट आयीं।

महामुनि बुद्ध का निश्चय अडिग रहा। उनका अधिष्ठान नहीं टूटा। वे प्रज्ञा में पूर्णतया स्थित बने रहे। आगे जाकर अपने यहां शायद इसी का उल्लेख करते हुए कहा गया –

वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते। – *(भगवद्गीता २.५६)*

यह महामुनि **स्थितधीः**, यानी स्थितप्रज्ञ, इसीलिए कहलाया, क्योंकि वह **वीतराग** हुआ। दिव्यांगनाएं मार-पुत्रियां उसमें **कामराग** नहीं जगा सकीं। वह विपश्यना के प्रज्ञाचक्षु द्वारा कामराग को पूर्णतया भस्मीभूत कर चुका था। प्रज्ञा द्वारा ही भय का मूलोच्छेदन कर **वीतभय** बन चुका था। भयंकर आक्रमण करने वाली मारसेना पर उसने रंचमात्र भी क्रोध नहीं किया। वह क्रोध के सारे संस्कार प्रज्ञा द्वारा उच्छिन्न कर **वीतक्रोध** हो चुका था। उसका मानस अपार करुणा से भर गया था। ऐसा महामुनि ही सही माने में **स्थितधीः**, यानी स्थितप्रज्ञ, कहलाया।

आगे उनके जीवन में एक स्थिति ऐसी आयी, जबकि ब्राह्मण मागंधीय ने उन्हें जीवन-संगिनी बनाने के लिए अपनी सर्वांगसुंदरी पुत्री प्रस्तावित की। तब भगवान ने इस प्रस्ताव को नकारते हुए कहा –

'दिस्वान तण्हं अरतिं रगञ्च, नाहोसि छन्दो अपि मेथुनस्मिं।
किमेविदं मुत्तकरीसपुण्णं, पादापि नं सम्फुसितुं न इच्छे'ति॥
– (सु०नि० ८४१)

– मारदेव की कन्याओं– तृष्णा, अरति और रगा को देख कर भी मेरी मैथुन की इच्छा नहीं हुई। उनकी तुलना में यह शरीर तो पेशाब, पाखाने से भरा है। इसे तो पैर से भी छूने की इच्छा नहीं होती।

कृतज्ञ संबुद्ध

बोधिमंड में सात सप्ताह तक विमुक्ति-सुख का रसपान कर लेने के पश्चात सम्यक संबुद्ध ने धर्मवितरण का निश्चय किया।

तब सोचने लगे कि किनसे आरंभ करूं? तत्काल श्रमण आचार्य आलारकालाम और श्रमण आचार्य उद्रक रामपुत्र का स्मरण हुआ। उनके प्रति असीम कृतज्ञता का भाव जागा, जिनसे उन्होंने क्रमशः सातवां और आठवां ध्यान सीखा था। वे दोनों अवश्य योग्य पात्र हैं। परंतु जब ध्यान करके देखा तब पाया कि उन दोनों का शरीरांत हो चुका है और दोनों अरूप ब्रह्मलोक में जन्म ले चुके हैं।

इस अवस्था में वे विपश्यना नहीं सीख सकते थे। विपश्यना सीखने के लिए साधक को कायस्थ होना आवश्यक है। **निच्चं कायगता सति**- काया के प्रति निरंतर सजग रहना आवश्यक है। अरूप ब्रह्मलोकों में भौतिक काया ही नहीं होती। अतः वहां विपश्यना नहीं सिखायी जा सकती।

फिर चिंतन किया कि अध्यात्म की इस यात्रा में उन्हें अन्य किसने सहायता की? तब वे पांच ब्राह्मण साथी याद आये जो कि यद्यपि उसे अंत में छोड़ कर चले गये थे, तथापि छह वर्षों तक उनके साथ तप में जुटे रहे और उनकी सेवा-सुश्रूषा भी करते रहे।

उनका ध्यान किया तो पाया कि वे ऋषिपत्तन मृगदाव वन (आज के सारनाथ) में ठहरे हुए हैं। तब कृतज्ञताविभोर हो अत्यंत करुणचित्त से उन्हें विपश्यना से लाभान्वित करने के लिए सारनाथ (वाराणसी) की ओर चल पड़े। सचमुच निःस्वार्थ सेवा और कृतज्ञता– ये दोनों सद्गुण दुर्लभ हैं। – *(वि०पि० पाचित्यादि महावग्गयोजना ६.१०, पञ्चवग्गियकथा)* भगवान बुद्ध में ये दोनों सद्गुण भरपूर थे।

उपक

बोधिमंड से वाराणसी की यात्रा पर निकलते ही भगवान बुद्ध को 'उपक' नाम का एक नग्न आजीवक गृहत्यागी मिला। वह सम्यक संबुद्ध को देखते ही स्तंभित रह गया। उसने देखा उनका व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली है। मुखमंडल पर उज्ज्वलता है, अपूर्व शांति है। आंखें शांत हैं, आकर्षक हैं।

यह देख कर उसने सम्यक संबुद्ध से कहा कि मुझे लगता है कि अपने प्राप्तव्य को प्राप्त कर लिया है।

भगवान बुद्ध ने उत्तर दिया-- हां, यह सच है। मैंने निर्वाणिक अवस्था प्राप्त कर ली है।

इस पर उपक ने पूछा– आपका गुरु कौन है? किसके निर्देशन पर चल कर इसे प्राप्त किया?

भगवान ने कहा – मेरा कोई गुरु नहीं है। मुक्ति का सही मार्ग मैंने स्वयं खोजा है और उस पर चल कर मुक्त हुआ हूं।

उपक ने कहा – इसका अर्थ है कि आप जिन हो गये हैं।

भगवान बुद्ध ने कहा – हां, मैं जिन हो गया हूं। अरहंत हो गया हूं। मैंने अपने भीतर के सभी कर्मसंस्कारों को नष्ट कर लिया है। तृष्णा का क्षय कर लिया है। मैंने पाप की सारी शक्तियों को जीत लिया है। इस कारण मैं सर्वजयी हो गया हूं। जिन हो गया हूं। सम्यक संबुद्ध हो गया हूं।

यह सुन कर विश्वास न करते हुए कहता है– 'होगा भाई', और मुँह मोड़ कर, मार्ग छोड़ कुमार्ग की ओर चल देता है। भगवान की रूपकाया से आकर्षित होकर भी वह उस समय उनकी धर्मकाया नहीं देख पाया, न उससे लाभान्वित हो पाया।

वह सचमुच कुमार्ग पर ही चला गया। मार्ग छोड़ कर वन-प्रदेश की पगडंडी पर जाते हुए किसी शिकारी की युवा लड़की के संपर्क में आया और गृहत्यागी का जीवन छोड़, गृहस्थ हो कर उसके साथ रहने लगा। उससे एक संतान भी हुई, परंतु वहां से शीघ्र ही उकता कर भाग चला और भटकते-भटकते भगवान की ही शरण पहुँचा। उसी समय भगवान की धर्मकाया से उसका संपर्क हुआ, उसे धर्म प्राप्त हुआ और सुमार्ग पर चल कर वह मुक्ति की ओर बढ़ चला।

स्वयं बुद्ध हुए इसलिए 'संबुद्ध' कहलाये। किसी से मुक्ति की विद्या सीख कर भवमुक्त हुए होते तो केवल 'अरहंत' कहलाते, 'बुद्ध' कहलाते। परंतु बिना किसी गुरु के मुक्ति का मार्ग स्वयं खोज कर भलीभांति मुक्त हुए इसलिए 'सम्यक संबुद्ध' कहलाने के अधिकारी हुए।

('धर्मचक्र प्रवर्तन' लेख 'विपश्यना' के जुलाई, २००७, वर्ष ३७, अंक १ में विस्तार से छप चुका है।)

यश

हाय दुःख! हाय संताप!

ऋषिपत्तन मृगदाव के बाहर से यह आवाज आयी। भोर का समय था। भगवान चंक्रमण कर रहे थे। उन्होंने ध्यान-बल से पहचाना। यह यश है।

वही यश, जिसकी माता सुजाता बोधिमंड के समीप विशाल वटवृक्ष के नीचे अपने इष्टदेवता से यह वर मांगने आयी थी कि उसका दिया हुआ पुत्र यश युवा हो गया है। घर में अपार संपत्ति है। समस्त सुख-सुविधाएं हैं। ऐशो-आराम और भोग-विलास के सारे साधन उपलब्ध हैं। एक अत्यंत सुंदर युवती से उसका विवाह भी कर दिया गया है। परंतु उसे लोकीय राग-रंग और वैभव-विलास में रंचमात्र भी रुचि नहीं है। उसे संसार में कुछ भी अच्छा नहीं लगता। सदा उदास रहता है। दुःखी रहता है। संतप्त रहता है। चाहती हूं कि सांसारिक सुखों की ओर उसकी रुचि हो।

अपने इष्टदेव से अपने पुत्र के लिए यही वरदान मांगने आयी थी। परंतु मुझे वहां बैठा देख कर समझ गयी कि मैं वट-देवता नहीं हूं। अतः वर मांगने के स्थान पर मुझे यह आशीर्वाद देती हुई चली गयी कि तेरी तपस्या सफल हो।

यह वही यश है जिसकी माता सुजाता ने मुझे सघन दूध की खीर अर्पित की थी, जिसे ग्रहण कर मैं सात सप्ताह तक निराहार रह सका।

उसी सुजाता का यह पुत्र है जो दुःखी है, संतप्त है।

भगवान चंक्रमण करते हुए रुके और एक बिछे आसन पर बैठ गये।

यश की आवाज थी – हाय दुःख!, हाय संताप!

भगवान ने उसका नाम लेकर उसे पुकारा –

आओ यश, यहां आओ। यहां न दुःख है! न संताप!

महाकारुणिक भगवान की वाणी सुनते ही यश रोमांचित हुआ। भगवान के समीप आकर उनके सामने बैठ कर उसने विनम्रभाव से नमन किया।

भगवान ने देखा कि अरहंत होने के लिए जिन पारमिताओं की जितनी-जितनी मात्रा में आवश्यकता है, वह इसमें सर्वथा परिपूर्ण हैं। अनेक जन्मों में इसने पारमिताएं परिपूर्ण करने में अथक परिश्रम किया है। यह पका हुआ व्यक्ति है। इसे मुक्ति का मार्ग अभी मिलना चाहिए जिससे सदा के लिए दुःखमुक्त हो जाय, संतापमुक्त हो जाय। भगवान ने उसे क्रमशः मुक्ति का उपदेश दिया। सारे शरीर में **उप्पादवय-धम्मिनो,** उत्पाद और व्यय का अनुभव करते-करते **उप्पज्जित्वा निरुज्झन्ति,** उत्पाद होकर निरुद्ध होने की अवस्था पर जा पहुँचा, जहां पहली बार निर्वाणिक डुबकी लगी और स्रोतापन्न अवस्था प्राप्त हुई।

इस बीच यश को खोजता हुआ उसका पिता भी वहां आ पहुँचा। भगवान ने उसे भी वही उपदेश दिया। वह भी उदय-व्यय की अनुभूति करता हुआ स्रोतापन्न अवस्था को प्राप्त होकर धन्य हुआ।

यश के पिता को जैसे-जैसे भगवान धर्म सिखा रहे थे वैसे-वैसे विपश्यना करते-करते यश ने अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली।

जब यश के पिता ने जाना कि उसके पुत्र ने साधना की सर्वोच्च अवस्था प्राप्त कर ली है और भवमुक्त जीवनमुक्त अरहंत हो गया है, तब वह प्रसन्नता से भर उठा। उसने भगवान से प्रार्थना की कि वे प्रातःकालीन भोजनदान के लिए उसके घर पधारें और सारे परिवार को कृतार्थ करें।

समय आने पर भगवान यश को साथ ले कर उसके माता-पिता के घर गये। वहां उन्होंने यश की माता और पूर्वपत्नी को धर्म दिया, जिससे कि वे दोनों भी स्रोतापन्न हुईं। सुजाता की खीर महाफलदायी हुई। पुत्र यश सर्वथा दुःखमुक्त हुआ और परिवार के अन्य तीनों सदस्य मुक्ति के स्रोत में पड़ गये, स्रोतापन्न हो गये।

भगवान सहित पंचवर्गीय भिक्षुओं के बाद यश सातवां अरहंत हुआ। उसके माता-पिता और पूर्वपत्नी पहले गृहस्थ स्रोतापन्न उपासक-उपासिकाएं हुईं।

श्रेष्ठी पुत्र यश के चौवन मित्र थे। वाराणसी के ही निवासी थे। जब उन्होंने देखा कि मित्र यश के जीवन में अविश्वसनीय परिवर्तन आ गया है। वह दुःखी रहने के स्थान पर सदैव प्रसन्न रहता है। तब वे भी भगवान की शरण में आ गये। धर्म और संघ की शरण में आ गये। सभी प्रभूत पुण्यपारमीसंपन्न थे। उन्हें धर्म की सेवा में प्रमुख काम करना था। वे सभी अरहंत अवस्था को प्राप्त हुए। सभी दुःख-मुक्त हुए, भव-मुक्त हुए।

उस समय भगवान के अतिरिक्त ब्राह्मण कुल से आये उनके पांच साथी तथा वैश्य कुल से आये यशसहित कुल पचपन युवक, यों (१+६०) इकसठ अरहंत हुए। सभी दुःख-मुक्त, सभी संताप-मुक्त हुए।

भगवान को दुःखवादी कहने वाले अज्ञानी यदि इस तथ्य को जानते तो भगवान पर मिथ्या आरोप लगाते ही नहीं। लगाते तो लज्जा के मारे सिर झुका लेते।

आवश्यक सूचना

इंटरनेट द्वारा बैंकिंग सुविधा में अभूतपूर्व सुधार के कारण यह सूचित करते हर्ष हो रहा है कि सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट (विपश्यना इंटरनेशनल एकेडमी) तथा विपश्यना रिसर्च इंस्टीट्यूट को दान देने के लिए अब हमारे निम्नांकित खातों में "स्टेट बैंक ऑफ इंडिया" की भारत की किसी भी शाखा द्वारा पैसे जमा करवा सकते हैं।

पैसे जमा करने के साथ कृपया विवरण सहित इसकी सूचना धम्मगिरि के अकाउंट विभाग को पत्र, फैक्स अथवा ई-मेल से अवश्य भेजें ताकि वे आप का पैसा बैंक में जमा होने की जांच करके, उसकी रसीद आपको भिजवा सकें। पैसे भरने के बारे में अधिक जानकारी स्थानीय बैंक से मालूम कर सकते हैं।

कोर बैंकिंग सिस्टम –

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के हमारे इगतपुरी के खाते के नं. हैं –

सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट – ११५४२१६०३४२,

विपश्यना रिसर्च इंस्टीट्यूट – ११५४२१६५६४६,

इगतपुरी शाखा का कोड नं. – ०३८६ है।

विदेश के साधक **"स्विफ्ट'** ट्रांसफर के द्वारा अपने पैसे जमा करा सकते हैं। विवरण इस प्रकार हैं –

SWIFT Transfer details of respective Trusts are as follow:

1. Sayagyi U Ba Khin Memorial trust
   (Vipassana International Academy):

SBININ BB 528 Branch Code 01247 beneficiary Sayagyi U Ba Khin Memorial Trust A\c No. 11542160342 AT Igatpuri branch code: 0386.

2. **Vipassana Research Institute (VRI)**

SBININ BB 528 branch code 01247 beneficiary Vipassana Research Institute A\c No. 11542165646 at Igatpuri branch code: 0386.

संपर्कः
सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट,
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org

केंद्र समाचार

धम्मरत, रतलाम

केंद्र निर्माण के प्रथम चरण में तार और मेंहदी की फेंसिंग, एक दिवसीय शिविर के लिए छोटा धम्मकक्ष, पानी की टंकी, बिजली,

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

रसोईघर, कुछ सामान्य शौचालय, चौकीदार निवासादि काम हो चुका है। १६ मार्च रविवार को एक दिवसीय शिविर से इसका उद्घाटन हुआ और आगामी १४ से २५ सितंबर तक पहला दस दिवसीय शिविर लगना निश्चित हुआ है। विश्वास है तब तक लगभग ३० से ५० साधकों के लायक आवश्यक व्यवस्था हो जायगी। *(विवरण कार्यक्रम सूची में देखें।)*

धम्मपोक्खर, पुष्कर (अजमेर)

केंद्र के प्रथम चरण का निर्माणकार्य पूरा होते ही शिविर की व्यवस्था की गयी और ३२ लोगों का पहला शिविर बहुत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। अब नियमितरूप से शिविर लगते रहेंगे। *(शिविर-विवरण कार्यक्रम सूची में देखें।)*

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. डॉ. हमीर एवं डॉ. निर्मला गानला, *धम्मालय (कोल्हापुर) की सेवा में क्षेत्रीय आचार्य की सहायता*

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Mr. Hans Kuoni, *Canada*
2. Ms. Sharon Reed, *Canada*
3. & 4. Mr. Robert Strand & Mrs. Edith Todd, *Canada*

नवनियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. ज्ञानदेव बन्सोडे, *अलीबाग*
२. श्री मन्नीलाल यादव, *फतेहपुर*
3. Ms. Belva Fisher, *USA*
4. & 5. Mr. Israel Hertzog & Mrs. Rony Ben-Ziony, *Israel*

बालशिविर-शिक्षक

१. श्रीमती स्निग्धा मेहता, *जयपुर*
2. U Chit Swe, *Myanmar*
3. U Khin Mg Kyi, *Myanmar*
4. Daw Lay Sin, *Myanmar*
5. Daw Khin Moo Myint, *Myanmar*
6. Mr. Jame (Dimitri) Topitzes, *West Indies / USA*
7. Ms Keo Luong, *France*
8. Ms. Sam Callaghan, *Australia*

दोहे धर्म के

शील-पुष्ट एकाग्र चित, प्रज्ञा में स्थित होय।
जो प्रज्ञा में स्थित हुआ, सहज मुक्त है सोय॥
बाहर भीतर सत्य का, जागे सम्यक ज्ञान।
कर्मों के बंधन कटें, जगे मुक्त मुस्कान॥
होश जगे जब धरम का, होवे दूर प्रमाद।
स्वदर्शन करते हुए, चखें मुक्ति का स्वाद॥
जहां धरम की चेतना, सतत तरंगित होय।
वहां मनुज की मुक्ति का, पंथ प्रकाशित होय॥
छोड़े मिथ्या कल्पना, करे सत्य की शोध।
सत्य शोधते शोधते, होय मुक्ति का बोध॥
ना कर्ता ना भोक्ता, द्रष्टा भी ना कोय।
केवल दर्शन ज्ञान हो, मुक्ति सहज ही होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सदाचार धारण करै, जद मन बस मँह होय।
ज्यूं प्रग्या मँह स्थित हुवै, जीवन मुक्ती होय॥
सदाचार अनुभव करै, अनुभव करै समाधि।
जद प्रग्या अनुभव करै, छूटै भव भय ब्याधि॥
बिना स्वयं अनुभव कर्यां, करै बात ही बात।
संप्रदाय छायो रवै, उगै न धरम प्रभात॥
धारण कर्यां हि धरम है, अनुभव कर्यां हि ग्यान।
कोरी-मोरी मान्यता, करै नहीं कल्याण॥
पग पग पग अनुभव करै, बढै धरम रै पंथ।
तो भव-बंधन स्यूं छुटै, हुवै दुखां रो अंत॥
विमल धरम धारण कर्यां, धरम सहायक होय।
देव ब्रह्म अर ईस सब, आपै रक्छक होय॥

देबेनरा मूंदड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2551, **चैत्र पूर्णिमा,** 20 **अप्रेल,** 2008

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. 500/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** 19156/71. Regn. No. LII/REN/RNP-46/2006-08

Licenced to post without Prepayment of postage -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org